सफदरजंग अस्पताल

सफदरजंग अस्पताल, भारत सरकार का एक प्रमुख फ्लैगशीप अस्पताल है। यह दिल्ली के केन्द्र में 47 एकड़ से अधिक भू-क्षेत्र में फैला हुआ है। देश के विभिन्न भागों के नागरिक तथा कई पड़ोसी देशों के लोग उपचार के लिए यहां आते हैं। आम दिनों में इस अस्पताल में आपातकालीन चिकित्सा हेतु लगभग 1400 मरीज तथा 8000-9000 बहिरंग रोगी आते है। इसके तीन दर्जन वार्डों में 2500 से लेकर 3500 मरीजों का इलाज किया जाता है। इसके दो प्रसूति गृहों में, 75 से अधिक नवजात शिशु प्रतिदिन जन्म लेते हैं। इसके 40 ऑपरेशन थिएटर में सातों दिन 24 घंटे शल्य चिकित्सक, रोगियों का ऑपरेशन करके उन्हें नया जीवन देते हैं।

इस अस्पताल का शुभारंभ सन् 1942 में उस समय हुआ जब द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ा हुआ था, इस युद्ध की काली छाया चीन-बर्मा-भारत को अपने में समेटे हुए थी। जख्मी सैनिकों की बढ़ती संख्या तथा घायल यू.एस. सैनिकों को तत्काल उपचार की जरुरतों को देखते हुए यू. एस. आर्मी कमाण्डर जनरल, जोसेफ स्टिलेवल ने दिल्ली में 100वें स्टेशन अस्पताल का निर्माण कराने का त्वरित निर्णय लिया। शीघ्र ही नए आर्मी बैरक में, अमेरिकन अस्पताल के नाम से लोकप्रिय एक नया अस्पताल शुरु हो गया। इस अस्पताल को शहर की एकमात्र हवाई पट्टी विलिंगडन एयर फील्ड के समीप बनाया गया। 150 बिस्तरों, एक्स-रे मशीन तथा ऑपरेशन थियेटरों से लैस इस अस्पताल ने काम करना शुरु कर दिया। यू. एस. आर्मी मेडिकल कोर की नर्सों तथा डॉक्टरों ने बहादुर सिपाहियों के जीवन को बचाने के लिए अस्पताल में रात-दिन सेवाएं देना शुरु कर दिया।

युद्ध समाप्त हो गया तथा शीघ्र ही भारत स्वतंत्र होकर अपने भाग्य का निर्माता बन गया। भारत सरकार ने युद्धकालीन अमेरिकन अस्पताल को अपनी जनता को समर्पित करने का निर्णय लिया। इस अस्पताल को जनता के लिए खोल दिया गया और 204 बिस्तरों के साथ इस अस्पताल में कार्य होने लगा। इस अस्पताल का नाम अवध के राजा मुगल जनरल अबुल मंसूर मिर्जा मुहम्मद मुकीम अली खान के नाम पर सफदरजंग रखा गया।

समय के साथ ही इस अस्पताल में साल-दर-साल नई ईंटें, नई इमारतें जुड़ती गईं, नए विभाग बनते गए और नई सुविधाएं उपलब्ध होती गईं। अपनी स्थापना के प्रारंभिक काल से ही यह मरीजों के लिए आशा और विश्वास का मंदिर बन गया। दूर-दूर से लोग यहां स्वास्थ्य लाभ और उपचार के लिए आने लगे।

1950 से ही यह अस्पताल देश में चिकित्सा शिक्षा का प्रमुख केन्द्र बना हुआ है। इसके चिकित्सा वार्डों तथा प्रयोगशालाओं में हजारों पैरामेडिकों, नर्सों और एमबीबीएस, एमडी/एमएस तथा पोस्ट डॉक्टोरल छात्रों ने अपने चिकित्सा ज्ञान को बढ़ाया है। जहां 1950 में, इस अस्पताल के वार्ड, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के छात्रों के प्रथम कुछ बैचों के लिए क्लिनिकल प्रशिक्षण के केन्द्र थे, वहीं सन् 1972 तथा 1989 के बीच यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ मेडिकल साइंसेज के छात्रों के लिए यह अल्मा मैटर था। वर्ष 2002 से यह अस्पताल, वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज के छात्रों के लिए घर बना हुआ है। विगत वर्षों में अस्पताल के कई अनेक छात्रों ने ख्याति अर्जित की है और दुनिया भर में अनेक बड़े पदों को सुशोभित किया है।

विगत वर्षों में इस अस्पताल के प्राध्यापक-वर्ग ने शिक्षा, क्लिनिकल अनुसंधान तथा मरीजों के उपचार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 1960 में, बालरोग विशेषज्ञ डॉ. शांति घोष ने सार्वजनिक अस्पतालों में नवजात बच्चों के लिए नर्सरी बनाने की मुहिम छेड़ी तथा इस दिन को भारत में नवजात शिशु चिकित्सा (मदर ऑफ नीयोनेटल मेडिसीन इन इंडिया) की जननी के रूप में याद किया जाता है। ऑर्थोपैडिक सर्जन बालू शंकरन ने बांग्लादेश युद्ध के दौरान घायल सैनिकों के पुनर्वास में सहायता देने के लिए 1972 में आर्टिफिशियल लिंब मैन्युफैक्चरिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया की स्थापना की। इसके दो वर्ष बाद, उन्होंने ओडिशा के ओलतपुर में प्रथम ग्रामीण पुनर्वास प्रशिक्षण केन्द्रः स्वामी विवेकानन्द नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ रिहैब्लीटेशन ट्रेनिंग एवं रिसर्च सेंटर की स्थापना की। ऐनाटॉमिस्ट (शरीर शास्त्री) डॉ. रामजी दास का न्यूरोऐनाटॉमी में महत्वपूर्ण कार्य "ग्रेज ऐनाटॉमी" का हिस्सा बना। जबकि शंकरन की सर्जिकल तकनीकों ने कैम्पबेल की 'ऑपरेटिव आर्थोपीडिक्स' में सृजनात्मक योगदान दिया। शरीर-क्रिया विज्ञानी डॉ. रमेश बिजलानी ने कोरोनरी हृदय-रोग की रोकथाम एवं प्रबंधन में योग की सकारात्मक भूमिका पर महत्वपूर्ण शोध कार्य किया।

1982 में, प्लास्टिक तथा माइक्रोवेस्कुलर सर्जन, डॉ. एस. पी. बजाज ने इंग्लैंड से वापस आने के बाद उत्तर भारत में प्रथम माइक्रोवेस्कुलर सर्जरी केन्द्र की स्थापना की। वे अपने कार्य के प्रति पूर्णतः समर्पित थे। उन्होंने अकेले ही 15 से 20 घंटे तक की अवधि की लम्बी सर्जरी करके ख्याति अर्जित की। उन्होंने अनेकों सर्जिकल तकनीकों का विकास किया तथा दिल्ली में पहली बार कलाई, भुजा तथा पैर के कटे हुए अंगों को जोड़ने का कार्य किया। सन् 2000 में, उन्होंने दिल्ली में प्रथम स्किनसेल कल्चर लैब की भी स्थापना की। 1980 के प्रारंभिक वर्षों में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। इनमें ईएनटी सर्जन पी एस सहारिया ने नाक के अंदर टेढ़ी हड्डी के लिए एक नई सेप्टोरहिनो प्लास्टी तकनीक का अविष्कार किया, जबकि डॉ. जे.सी. सूरी ने देश के प्रथम सार्वजनिक स्लीप लैब तथा पल्मॉनरी क्रिटिकल केयर यूनिट की स्थापना की। बाद में, राष्ट्रमंडल खेल 2010 के शुरु होने से पहले इस अस्पताल में उत्तर भारत का पहला स्पोर्ट इंजरी केन्द्र खोला गया।

देश का सबसे बड़ा सार्वजनिक अस्पताल होने का गौरव हासिल करने वाला सफदरजंग अस्पताल सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा केन्द्र बनने के लिए तैयार है। इसका मिशन नेक तथा पवित्र है, क्योंकि यह संस्थान मैत्रीपूर्ण वातावरण में किफायती आधुनिक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए पूर्ण रूप से समर्पित है।

डाक विभाग, सफदरजंग अस्पताल पर एक से-टेनेंट स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभारः-

मूलपाठ	:	प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना पर आधारित
डाकटिकट/प्रथम दिवस आवरण/ विवरणिका	:	यू एस आर्मी सिग्नल कॉर्प्स, नेशनल अर्काइव्स एंड रिकार्ड्स एडमिनिस्ट्रेशन, यूनाईटेड स्टेट्स से प्राप्त फोटोग्राफ्स पर श्री अनुज द्वारा डिजाईन किया गया
विरूपण	:	श्रीमती नीनू गुप्ता

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग Denomination	:	500 पैसा(2) 500 p(2)
मुद्रित डाक-टिकटें Stamps Printed	:	603500 प्रत्येक 603500 each
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	:	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य: ₹ 5.00

SAFDARJUNG HOSPITAL

A major flagship hospital of the Government of India, Safdarjung Hospital is spread over a land area of 47 acres in the heart of Delhi. Citizens from different parts of the country, and many neighbouring countries, visit the facility to receive life-saving treatment. On most days, the hospital attends to around 1,400 emergencies, 8,000-9,000 out patients, and its three dozen wards play home to 2,500 to 3,500 patients. In its two labour rooms, more than 75 babies are born each day, while its 40 operation theatres hum 24 × 7 with surgeons operating on patients to offer them a new lease of life.

The origin of this hospital can be traced back to year 1942. Dark clouds, billowing with smoke of World War II, were hanging heavy over the China-Burma-India war theatre. With the casualties mounting, the injured US soldiers needed immediate treatment. US Army Commander General Joseph Stilwell took an active decision to build the 100th Station Hospital in Delhi. Soon a new hospital, popularly called the American Hospital, took shape in the newly erected army barracks. Strategically built close to the city's lone airstrip, the Willingdon Airfield, the hospital commenced operations with 150 beds, an X-ray machine and operation theatres. US Army Medical Corps nurses and doctors worked round the clock in the hospital to salvage brave lives.

The War ended, and soon, India became independent, a master of her own destiny. The Government of India decided to dedicate the wartime American hospital to her people. With its portals thrown open to the public, the hospital began operations with 204 beds and was rechristened as Safdarjung, after the Raja of Awadh Mogul General Abul Mansur Mirza Muhammad Muqim Ali Khan.

In time, as the hospital grew brick by brick, inch-by-inch, new buildings were added, new departments came into being, and the facility grew with each passing year. While still in its early formative years, it became a temple of faith and hope for the sick. People came from far for treatment and healing.

Since the 1950s, the hospital has been country's major academic hub. Its clinical wards and laboratories have honed thousands of paramedics, nurses and MBBS, MD/MS and postdoctoral students. If in 1950s, its wards were the clinical training ground for the first few batches of students from the All India Institute of Medical Sciences; between1972 and 1989, it was alma mater to the students of University College of Medical Sciences. Since 2002, the hospital has been a home for the students of Vardhman Mahavir Medical College. Over the years, many alumni of the hospital have found huge acclaim, and hold chairs of eminence globally.

Down the ages, the faculty of the hospital has made a legendary contribution in the realm of academics, clinical research and patient care. In the 1960s, paediatrician Dr Shanti Ghosh flagged the mission of building neonatal nurseries in public hospitals, and is fondly remembered to this day as the mother of Neonatal Medicine in India. Orthopaedic surgeon Balu Sankaran founded the Artificial Limb Manufacturing Corporation of India in 1972 to aid the rehabilitation of soldiers injured during the Bangladesh war. Two years later, he set up the first rural rehabilitation training centre—the Swami Vivekanand National Institute of Rehabilitation Training and Research in Olatpur, Odisha. Anatomist Dr Ramji Das's seminal work in neuro anatomy formed a part of the bible of the days, Gray's Anatomy, while Sankaran's surgical techniques waxed proud in Campbell's Operative Orthopedics. Physiologist Dr Ramesh Bijlani carried out seminal research on the positive role of yoga in prevention and management of coronary heart disease.

In 1982, plastic and micro vascular surgeon Dr. S. P. Bajaj established the first micro vascular surgery centre in North India on his return from UK. Deeply devoted, he was soon to become a legend for his marathon single-handed 15-to 20-hour long surgeries. He developed many new surgical techniques, and rejoining severed limbs he performed Delhi's first wrist, arm and leg replants. In 2000, he also established the first skin cell culture lab in Delhi. The early 1980s also saw a number of other pioneering developments: ENT surgeon PS Saharia devised a new septorhinoplasty technique for a twisted nasal partition; while Dr JC Suri established the country's first public sleep lab and pulmonary critical care unit. Later, just before the Commonwealth Games 2010, the hospital acquired North India's first Sports Injury Centre.

Holding the flag of being the country's largest public hospital, Safdarjung is all set to take wings to emerge as one of the finest world-class healthcare facility. The mission is noble and pious as the institution stands deeply committed to deliver affordable state-of-art healthcare to the people in a caring, friendly environment.

Department of Posts is pleased to issue a se-tenant Commemorative Postage Stamps on Safdarjung Hospital.

Credits:

Text	:	Based on the information received from proponent
Stamp/ FDC/ Brochure	:	Designed by Sh. Anuj based on the photographs received from US Army Signal Corps, National Archives and Records Administration, United States; and Ashoo Sharma
Cancellation Cachet	:	Smt. Nenu Gupta

भारतीय डाक विभाग

DEPARTMENT OF POSTS

INDIA

सफदरजंग अस्पताल

SAFDARJUNG HOSPITAL

विवरणिका

BROCHURE